International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर की वैचारिक भूमिका: का एक अध्ययन

जितेन्द्र

शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक।

डॉ. अशोक कुमार

शोध निर्देशक, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक।

सारांश

यह शोध–पत्र भारतीय राष्ट्रवाद के वैचारिक विकास में बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के संक्रमणकाल में भारतीय समाज राजनीतिक दासता, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और सामाजिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। इस संदर्भ में बंकिम चन्द्र चटर्जी ने अपने साहित्य के माध्यम से एक सशक्त, सांस्कृतिक और धार्मिक आधार पर निर्मित राष्ट्रवाद की अवधारणा को प्रस्तुत किया, जिसमें "वंदे मातरम्" जैसे प्रतीक राष्ट्रीय चेतना के वाहक बने। दूसरी ओर, रविन्द्र नाथ टैगोर ने राष्ट्रवाद को एक व्यापक, मानवतावादी और सार्वभौमिक दृष्टिकोण से देखा, जिसमें संकीर्ण राष्ट्रवाद की आलोचना और विश्वबंधुत्व की भावना प्रमुख रही। यह अध्ययन दोनों विचारकों के साहित्यिक कृतियों, दार्शनिक दृष्टिकोणों और सामाजिक चिंतन का विश्लेषण करता है, ताकि यह समझा जा सके कि भारतीय राष्ट्रवाद का स्वरूप केवल राजनीतिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और मानवीय आयामों से भी निर्मित हुआ है। तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह शोध यह स्पष्ट करता है कि जहाँ बंकिम का राष्ट्रवाद प्रेरणात्मक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण पर आधारित था, वहीं टैगोर का दृष्टिकोण उदार, आलोचनात्मक और वैश्विक चेतना से प्रेरित था। यह अध्ययन भारतीय राष्ट्रवाद की विविधता और उसकी जटिलता को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

मुख्य शब्दः भारतीय राष्ट्रवाद, बंकिम चन्द्र चटर्जी, रविन्द्र नाथ टैगोर, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, मानवतावाद, सामाजिक चिंतन, तुलनात्मक अध्ययन

परिचय

भारतीय राष्ट्रवाद आधुनिक भारत के निर्माण की सबसे महत्त्वपूर्ण वैचारिक प्रक्रियाओं में से एक है। यह केवल विदेशी शासन के विरुद्ध राजनीतिक प्रतिरोध की अभिव्यक्ति नहीं था, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक जागरण का परिणाम भी था। भारत जैसे बहुभाषी, बहुधार्मिक, बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक देश में राष्ट्रवाद की अवधारणा स्वतः विकसित नहीं हुई, बल्कि इसे साहित्य, इतिहास, धर्म, शिक्षा, सामाजिक सुधार आंदोलनों और औपनिवेशिक अनुभवों के संयुक्त प्रभाव से निर्मित किया गया। इस निर्माण–प्रक्रिया में अनेक चिंतकों, समाज–सुधारकों, नेताओं और साहित्यकारों ने अपनी

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

विशिष्ट भूमिका निभाई। इनमें बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर दो ऐसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को न केवल वैचारिक दिशा दी, बल्कि उसे साहित्यिक, सांस्कृतिक और नैतिक आधार भी प्रदान किया। उन्नीसवीं शताब्दी का भारत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत राजनीतिक दमन, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक अस्मिता के संकट से गुजर रहा था। अंग्रेजी शासन ने भारतीय समाज की पारंपरिक संरचनाओं को चुनौती दी, किंतु साथ ही आधुनिक शिक्षा, मुद्रण संस्कृति, प्रशासनिक पुनर्गठन और पश्चिमी राजनीतिक विचारों के प्रसार के माध्यम से नए बौद्धिक विमर्शों को भी जन्म दिया। इसी दौर में भारतीय समाज में यह प्रश्न उभरने लगा कि भारत की पहचान क्या है, उसका अतीत कितना गौरवपूर्ण है, उसके समाज की बुनियादी शक्तियाँ क्या हैं और किस प्रकार वह औपनिवेशिक दासता से मुक्त होकर आत्मनिर्भर और आत्मसम्मानी राष्ट्र बन सकता है। इस प्रकार राष्ट्रवाद केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम न रहकर आत्म–पहचान, सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का माध्यम बन गया।

भारतीय राष्ट्रवाद के इस वैचारिक विकास में साहित्य की भूमिका अत्यंत केंद्रीय रही। साहित्य ने राष्ट्र को केवल एक प्रशासनिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवित सांस्कृतिक समुदाय, एक स्मृतिशील सभ्यता और एक नैतिक आकांक्षा के रूप में प्रस्तुत किया। कविता, उपन्यास, निबंध और गीतों के माध्यम से राष्ट्र की ऐसी छवि निर्मित की गई, जिसने जनता के हृदय में आत्मगौरव, स्वाधीनता की आकांक्षा और सामूहिक एकता की भावना को जगाया। बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर इसी साहित्यिक–वैचारिक परंपरा के दो अत्यंत प्रभावशाली स्तंभ हैं। दोनों ने अपने–अपने ढंग से भारत की आत्मा को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया, किंतु उनके राष्ट्रवाद की अवधारणाएँ स्वरूप, दृष्टिकोण और उद्देश्य की दृष्टि से भिन्न थीं। यही भिन्नता उनके तुलनात्मक अध्ययन को अत्यंत महत्त्वपूर्ण बनाती है।

बंकिम चन्द्र चटर्जी भारतीय राष्ट्रवाद के प्रारंभिक वैचारिक निर्माताओं में माने जाते हैं। उन्होंने ऐसे समय में लेखन किया जब भारतीय समाज औपनिवेशिक हीनभावना, सामाजिक जड़ता और राजनीतिक निष्क्रियता से जूझ रहा था। बंकिम ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज को उसके गौरवपूर्ण अतीत, सांस्कृतिक शक्ति और आध्यात्मिक आधार का स्मरण कराया। उनके लिए राष्ट्र केवल भूगोल नहीं था, बल्कि वह मातृभूमि, संस्कृति, धर्म, इतिहास और सामूहिक चेतना का जीवंत रूप था। उनकी प्रसिद्ध कृति 'आनंदमठ' तथा उसमें निहित 'वंदे मातरम्' ने भारतीय राष्ट्रवाद को भावनात्मक और सांस्कृतिक आधार दिया। मातृभूमि को देवीस्वरूप में प्रतिष्ठित कर बंकिम ने राष्ट्रभक्ति को केवल राजनीतिक निष्ठा नहीं रहने दिया, बल्कि उसे सांस्कृतिक आस्था और नैतिक कर्तव्य का रूप दिया। इस प्रकार उनका राष्ट्रवाद प्रेरक, जागरणकारी और सांस्कृतिक पुनरुत्थान पर आधारित था।

दूसरी ओर, रविन्द्र नाथ टैगोर का राष्ट्रवाद अधिक व्यापक, मानवीय और आलोचनात्मक है। टैगोर ने राष्ट्रवाद को स्वीकार किया, किंतु उसकी संकीर्ण, उग्र और अंधराष्ट्रवादी व्याख्याओं का विरोध किया। उनके लिए राष्ट्र केवल राजनीतिक शक्ति–संगठन नहीं, बल्कि मानव जीवन

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

की नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम होना चाहिए। टैगोर पश्चिमी साम्राज्यवादी राष्ट्रवाद की आलोचना करते हुए यह मानते थे कि यदि राष्ट्रवाद मानवता, नैतिकता और स्वतंत्रता से कट जाए, तो वह विनाशकारी बन सकता है। उनकी रचनाओं में भारतीयता की गहरी भावना मौजूद है, किंतु वह मानवतावाद, विश्वबंधुत्व और सांस्कृतिक सहअस्तित्व से संयुक्त है। 'गीतांजलि', 'गोरा', 'घरे–बाइरे' और 'जन गण मन' जैसी रचनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि टैगोर का राष्ट्रवाद भावनात्मक होते हुए भी विवेकपूर्ण, सांस्कृतिक होते हुए भी उदार और राष्ट्रीय होते हुए भी सार्वभौमिक है।

इन दोनों विचारकों का तुलनात्मक अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि भारतीय राष्ट्रवाद कोई एकरूपी अवधारणा नहीं था। उसमें सांस्कृतिक पुनर्जागरण, धार्मिक प्रतीकवाद, नैतिक चेतना, सामाजिक सुधार, मानवतावाद, आधुनिकता और परंपरा सभी के विविध स्वर उपस्थित थे। बंकिम का राष्ट्रवाद भारतीयों में स्वाभिमान, संगठन और प्रतिरोध की चेतना जगाता है। टैगोर का राष्ट्रवाद इस चेतना को नैतिक आत्मसंयम, सहिष्णुता और वैश्विक दृष्टि प्रदान करता है। एक ओर बंकिम जन–भावना को उद्वेलित करते हैं, दूसरी ओर टैगोर उसे विवेक और मानवता की दिशा में संतुलित करते हैं। इसीलिए दोनों की वैचारिक भूमिका परस्पर विरोधी न होकर भारतीय राष्ट्रवाद की दो पूरक धाराओं का प्रतिनिधित्व करती है।

भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा और उसका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा आधुनिक भारत के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण बौद्धिक और राजनीतिक प्रक्रिया है। इसे केवल विदेशी शासन के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में समझना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि इसका स्वरूप राजनीतिक संघर्ष से कहीं अधिक व्यापक था। भारत में राष्ट्रवाद का विकास यूरोप की तरह किसी एक भाषा, एक धर्म या एक जातीय एकरूपता के आधार पर नहीं हुआ। भारत सदियों से विविधताओं का देश रहा है, जहाँ अनेक भाषाएँ, धर्म, जातियाँ, परंपराएँ और सांस्कृतिक रूप एक साथ अस्तित्व में रहे हैं। ऐसे में भारतीय राष्ट्रवाद का निर्माण एक साझा ऐतिहासिक अनुभव, सांस्कृतिक स्मृति और औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध सामूहिक प्रतिरोध की भावना से हुआ। ब्रिटिश शासन ने भारत को प्रशासनिक रूप से एक इकाई के रूप में संगठित किया, पर साथ ही उसने आर्थिक शोषण, सामाजिक विभाजन और सांस्कृतिक हीनता की भावना भी पैदा की। इन परिस्थितियों ने भारतीयों को अपनी पहचान, गौरव और अधिकारों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्रवाद इसी आत्मबोध की प्रक्रिया से निकला। इसमें स्वतंत्रता प्राप्ति की इच्छा के साथ–साथ अपनी सभ्यता, संस्कृति, धर्म, भाषा और सामाजिक मूल्यों के पुनर्मूल्यांकन की चेतना भी शामिल थी। भारतीय राष्ट्रवाद की विशेषता यह रही कि उसने परंपरा और आधुनिकता दोनों को साथ लेकर चलने का प्रयास किया। एक ओर प्राचीन भारतीय विरासत और सांस्कृतिक गौरव को महत्व दिया गया, दूसरी ओर आधुनिक शिक्षा, लोकतंत्र, अधिकार और स्वशासन जैसे विचार भी इसमें सम्मिलित हुए।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

औपनिवेशिक शासन और राष्ट्रीय चेतना का उदय

औपनिवेशिक शासन भारतीय राष्ट्रीय चेतना के उदय में एक विरोधाभासी किंतु निर्णायक कारक सिद्ध हुआ। ब्रिटिश शासन का मूल उद्देश्य भारत पर राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करना और उसके संसाधनों का अपने हित में उपयोग करना था। इसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज को आर्थिक शोषण, प्रशासनिक अन्याय, नस्लीय भेदभाव और सांस्कृतिक अपमान का सामना करना पड़ा। इन सबने भारतीयों के भीतर असंतोष और प्रतिरोध की भावना को जन्म दिया। यही प्रतिरोध धीरे–धीरे राष्ट्रीय चेतना में परिवर्तित हुआ। दूसरी ओर ब्रिटिश शासन ने कुछ ऐसे साधन भी उपलब्ध कराए, जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना को स्वर दिया। अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय बुद्धिजीवियों को आधुनिक राजनीतिक अवधारणाओं जैसे स्वतंत्रता, समानता, अधिकार, राष्ट्र और प्रतिनिधित्व से परिचित कराया। आधुनिक प्रेस और मुद्रण संस्कृ ति के विकास ने विचारों के प्रसार को तेज किया। समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों और सार्वजनिक वाद–विवादों ने एक ऐसे बौद्धिक वातावरण का निर्माण किया, जिसमें भारतीय समाज अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य पर विचार करने लगा। रेल, डाक और तार व्यवस्था ने विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने का कार्य किया, जिससे भारत एक साझा अनुभव वाले भूभाग के रूप में अधिक स्पष्ट होने लगा। इसी काल में भारतीय शिक्षित वर्ग ने यह महसूस किया कि अंग्रेजी शासन केवल प्रशासनिक व्यवस्था नहीं, बल्कि प्रभुत्व और शोषण की व्यवस्था है। उन्होंने भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दशा का विश्लेषण करना शुरू किया और राष्ट्रीय स्वाभिमान की आवश्यकता को रेखांकित किया। धीरे–धीरे यह चेतना अभिजात वर्ग से निकलकर व्यापक समाज तक पहुँची। इस प्रकार औपनिवेशिक शासन, जो दमन का स्रोत था, वही राष्ट्रीय जागरण का प्रेरक भी बना। राष्ट्रीय चेतना का उदय इसी ऐतिहासिक द्वंद्व की उपज था।

साहित्य और राष्ट्रवाद

भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में साहित्य ने अत्यंत प्रभावशाली और सृजनात्मक भूमिका निभाई। राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक नीतियों, आंदोलनों या संगठनों से निर्मित नहीं होता, बल्कि वह जनता की भावनाओं, स्मृतियों, कल्पनाओं और सामूहिक चेतना में भी आकार लेता है। यह कार्य साहित्य ने सबसे प्रभावी ढंग से किया। कविता, गीत, उपन्यास, निबंध और नाटक के माध्यम से राष्ट्र को एक जीवंत, भावनात्मक और सांस्कृतिक सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया। साहित्य ने राष्ट्र को केवल नक्शे की सीमाओं में बँधे भू–भाग के रूप में नहीं, बल्कि मातृभूमि, संस्कृति, परंपरा और सामूहिक अस्मिता के रूप में रूपायित किया। भारतीय साहित्यकारों ने औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध प्रतिरोध की भावना को कलात्मक रूप दिया। उन्होंने अतीत के गौरव, वर्तमान के संघर्ष और भविष्य की आशा को शब्दों में व्यक्त कर जनमानस को प्रेरित किया। साहित्य के माध्यम से राष्ट्र के प्रति प्रेम, त्याग, समर्पण और संघर्ष की भावना स्वाभाविक रूप से विकसित हुई। यह विशेष रूप से उस समय महत्त्वपूर्ण था, जब राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक नेतृत्व तक सीमित न रहकर जन–आंदोलन का रूप

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

लेना था। बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर इस संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। बंकिम ने साहित्य के माध्यम से राष्ट्र को मातृभूमि और देवीस्वरूप में प्रतिष्ठित किया, जिससे राष्ट्रभक्ति भावनात्मक और धार्मिक दोनों स्तरों पर जनमानस से जुड़ी। टैगोर ने राष्ट्र को मानवता, संस्कृति और आत्मिक स्वतंत्रता से जोड़ा, जिससे राष्ट्रवाद को नैतिक और दार्शनिक गहराई मिली। इस प्रकार साहित्य उनके यहाँ केवल मनोरंजन या सौंदर्यबोध का साधन नहीं रहा, बल्कि समाज–निर्माण, चेतना–जागरण और राष्ट्र–निर्माण का सशक्त माध्यम बन गया।

बंकिम चन्द्र चटर्जी का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

बंकिम चन्द्र चटर्जी भारतीय राष्ट्रवादी चिंतन के उन अग्रदूतों में हैं जिन्होंने राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक और भावात्मक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। उनके राष्ट्रवादी विचारों का केंद्र भारतीय संस्कृति, धर्म, इतिहास और मातृभूमि के प्रति गहरी निष्ठा है। वे मानते थे कि कोई भी राष्ट्र तब तक संगठित और शक्तिशाली नहीं बन सकता जब तक वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों, ऐतिहासिक गौरव और आध्यात्मिक परंपराओं को पहचान न ले। इसी कारण उनका राष्ट्रवाद राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आवश्यकता पर बल देता है। बंकिम का साहित्य उस समय सामने आया जब भारतीय समाज औपनिवेशिक हीनता, सामाजिक जड़ता और आत्मविश्वास की कमी से जूझ रहा था। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीयों में आत्मगौरव और राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने का कार्य किया। उनकी प्रसिद्ध रचना 'आनंदमठ' और उसमें शामिल 'वंदे मातरम्' भारतीय राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक प्रतीक बन गए। 'वंदे मातरम्' में राष्ट्र को मातृशक्ति के रूप में देखा गया है, जिससे मातृभूमि के प्रति श्रद्धा, समर्पण और संघर्ष की भावना विकसित होती है। बंकिम का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केवल अतीत की प्रशंसा नहीं है, बल्कि वर्तमान को जागृत करने का प्रयास भी है। वे भारतीय समाज को यह संदेश देते हैं कि राष्ट्र की सेवा केवल राजनीतिक कर्तव्य नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व भी है। उनके राष्ट्रवाद में धर्म, संस्कृति और इतिहास का गहरा अंतर्संबंध दिखाई देता है। इस दृष्टि से बंकिम भारतीय राष्ट्रवाद को एक ऐसी भावनात्मक शक्ति में बदलते हैं, जो जनता को एक साझा राष्ट्रीय पहचान और स्वाधीनता की आकांक्षा से जोड़ती है।

बंकिम के राष्ट्रवाद में धर्म, इतिहास और मातृभूमि की भूमिका

बंकिम चन्द्र चटर्जी के राष्ट्रवादी चिंतन में धर्म, इतिहास और मातृभूमि तीनों अत्यंत महत्वपूर्ण तत्त्व हैं। उनके लिए धर्म केवल पूजा–पाठ या संप्रदायगत मान्यता नहीं, बल्कि नैतिक शक्ति, आत्मानुशासन और सामूहिक जीवन के आदर्शों का स्रोत है। वे राष्ट्र की सेवा को भी एक प्रकार का धर्म मानते हैं। इस प्रकार उनके यहाँ राष्ट्रवाद और धर्म में विरोध नहीं, बल्कि नैतिक संबंध दिखाई देता है। राष्ट्र की रक्षा, सेवा और सम्मान उनके चिंतन में आध्यात्मिक और नैतिक कर्तव्य का रूप ले लेते हैं। इतिहास बंकिम के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वे भारतीय अतीत को केवल स्मृति के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे वर्तमान समाज के आत्मगौरव को जगाने वाले साधन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनका विश्वास था कि जब

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

समाज अपने गौरवशाली इतिहास को समझेगा, तभी उसमें दासता से मुक्ति पाने की इच्छाशक्ति उत्पन्न होगी। इसीलिए वे ऐतिहासिक अनुभवों और सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से राष्ट्र की चेतना को मजबूत करने का प्रयास करते हैं। मातृभूमि की अवधारणा बंकिम के राष्ट्रवाद की आत्मा है। उनके लिए भारत केवल भौगोलिक भूमि नहीं, बल्कि एक पवित्र सत्ता है, जो माता के समान पूज्य है। 'वंदे मातरम्' में मातृभूमि को देवीस्वरूप में चित्रित कर उन्होंने राष्ट्रभक्ति को अत्यंत भावनात्मक और प्रतीकात्मक गहराई प्रदान की। इससे राष्ट्रवाद जनमानस में अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रवेश करता है। इस प्रकार धर्म उसे नैतिक बल देता है, इतिहास उसे प्रेरणा देता है और मातृभूमि उसे भावनात्मक आधार प्रदान करती है। यही त्रयी बंकिम के राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक शक्ति और जन–प्रेरणा का रूप देती है।

रविन्द्र नाथ टैगोर का मानवतावादी राष्ट्रवाद

रविन्द्र नाथ टैगोर का राष्ट्रवाद भारतीय बौद्धिक परंपरा में एक विशिष्ट और गहन स्थान रखता है। वे भारत से गहरा प्रेम करते थे और उसकी सांस्कृतिक आत्मा पर गहरा विश्वास रखते थे, किंतु वे राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक उन्माद या शक्ति–संघर्ष के रूप में नहीं देखते थे। टैगोर का राष्ट्रवाद मानवतावादी, नैतिक और आध्यात्मिक आधारों पर निर्मित है। वे मानते थे कि राष्ट्र तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति की स्वतंत्रता, रचनात्मकता और मानवीय गरिमा की रक्षा करे। टैगोर ने उस राष्ट्रवाद की आलोचना की जो संकीर्णता, हिंसा, घृणा या अंधानुकरण पर आधारित हो। उन्होंने विशेष रूप से पश्चिमी साम्राज्यवादी राष्ट्रवाद की आलोचना करते हुए कहा कि जब राष्ट्रवाद शक्ति और वर्चस्व का माध्यम बन जाता है, तब वह मानवता के लिए खतरनाक बन जाता है। इसीलिए वे ऐसे राष्ट्रवाद की वकालत करते हैं जो सांस्कृतिक विविधता, सहअस्तित्व और विश्वबंधुत्व पर आधारित हो। उनके लिए भारत की वास्तविक शक्ति उसकी बहुलता, सहिष्णुता, आध्यात्मिकता और मानवीय संवेदना में निहित है। उनकी रचनाएँ जैसे 'गीतांजलि', 'गोरा', 'घरे–बाइरे' और 'जन गण मन' इस विचारधारा को स्पष्ट करती हैं। टैगोर भारतीयता को व्यापक मानवता के भीतर स्थापित करते हैं। वे राष्ट्र को मानवता से ऊपर नहीं रखते, बल्कि राष्ट्रवाद को नैतिकता से संचालित देखना चाहते हैं। इस दृष्टि से उनका राष्ट्रवाद भारतीय होते हुए भी सार्वभौमिक है। उन्होंने राष्ट्रवाद को प्रेम, विवेक, नैतिकता और मानव एकता की दिशा में रूपांतरित किया, जो उन्हें भारतीय राष्ट्रवादी चिंतन की विशिष्ट धारा का प्रतिनिधि बनाता है।

टैगोर के राष्ट्रवादी चिंतन में नैतिकता और विश्वबंधुत्व

टैगोर के राष्ट्रवादी चिंतन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें नैतिकता और विश्वबंधुत्व को केंद्रीय स्थान प्राप्त है। वे राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक चेतना या स्वतंत्रता की आकांक्षा तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे नैतिक आत्मानुशासन और मानवीय एकता से जोड़ते हैं। उनके अनुसार यदि राष्ट्रवाद मनुष्य को अधिक न्यायपूर्ण, सहिष्णु और मानवीय नहीं बनाता, तो उसका स्वरूप अधूरा और खतरनाक हो सकता है। इसलिए टैगोर राष्ट्रवाद के विवेकपूर्ण और नैतिक रूप पर बल देते हैं। टैगोर ने पश्चिम में विकसित उस राष्ट्रवाद की आलोचना

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

की जो शक्ति, प्रतिस्पर्धा, सैन्यवाद और साम्राज्यवाद से जुड़ा हुआ था। उन्होंने देखा कि ऐसा राष्ट्रवाद मनुष्यता को विभाजित करता है और एक राष्ट्र को दूसरे पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है। वे इस विचार के विरोधी थे कि राष्ट्र के नाम पर मनुष्य की स्वतंत्रता, संवेदना और नैतिकता का दमन किया जाए। इसीलिए उनके चिंतन में विश्वबंधुत्व का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके लिए मनुष्य पहले मानव है, बाद में किसी राष्ट्र का सदस्य। टैगोर का विश्वास था कि भारत की सभ्यता की वास्तविक विशेषता उसकी समावेशी भावना है। भारत ने विविधताओं को आत्मसात किया है, इसलिए उसका राष्ट्रवाद भी उदार और मानवीय होना चाहिए। वे ऐसी राष्ट्रीय चेतना चाहते थे जो विश्व मानवता से जुड़ी हो। उनके राष्ट्रवाद में आत्मीयता, सहयोग, सांस्कृतिक सम्मान और आध्यात्मिक स्वतंत्रता का समन्वय है। इसीलिए टैगोर का राष्ट्रवादी चिंतन केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि समूची मानवता के लिए एक नैतिक संदेश के रूप में देखा जा सकता है।

बंकिम और टैगोर के राष्ट्रवादी चिंतन का तुलनात्मक आधार

बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर दोनों भारतीय राष्ट्रवाद के महत्त्वपूर्ण विचारक हैं, किंतु उनके राष्ट्रवादी दृष्टिकोणों का आधार अलग–अलग है। तुलनात्मक अध्ययन का सबसे महत्त्वपूर्ण बिंदु यह है कि दोनों का उद्देश्य भारत का जागरण, आत्मसम्मान और उन्नति था, लेकिन उस लक्ष्य तक पहुँचने के उनके वैचारिक मार्ग भिन्न थे। बंकिम का राष्ट्रवाद मुख्यतः सांस्कृतिक, प्रतीकात्मक और भावनात्मक है, जबकि टैगोर का राष्ट्रवाद नैतिक, मानवतावादी और आत्मालोचनात्मक है। बंकिम राष्ट्र को मातृभूमि, धर्म और सांस्कृतिक गौरव के माध्यम से जनमानस में प्रतिष्ठित करते हैं। उनके लिए राष्ट्रभक्ति एक प्रेरक शक्ति है, जो व्यक्ति को त्याग, समर्पण और संघर्ष के लिए उद्यत करती है। दूसरी ओर टैगोर राष्ट्रवाद को मानवता के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। वे राष्ट्र के प्रति प्रेम का समर्थन करते हैं, परंतु उसे अंधभक्ति या उग्र सामूहिकता में बदलने के विरोधी हैं। उनके लिए राष्ट्रवाद तभी उचित है जब वह मनुष्य की स्वतंत्रता, नैतिकता और विश्वबंधुत्व के साथ जुड़ा रहे। दोनों के राष्ट्रवाद में एक समानता यह भी है कि दोनों साहित्य को सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का साधन मानते हैं। अंतर यह है कि बंकिम का साहित्य राष्ट्रीय आवेग को उद्वेलित करता है, जबकि टैगोर का साहित्य उस आवेग को नैतिक दिशा देता है। बंकिम जन–जागरण के विचारक हैं, टैगोर आत्मसंयम और मानवीय संतुलन के। इस प्रकार तुलनात्मक आधार यह स्पष्ट करता है कि भारतीय राष्ट्रवाद केवल एक स्वर वाला नहीं था, बल्कि उसमें भावनात्मक ऊर्जा और नैतिक विवेक दोनों समान रूप से सक्रिय थे।

भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में दोनों की पूरक भूमिका

भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर की भूमिकाएँ परस्पर पूरक रूप में समझी जानी चाहिए। बंकिम ने राष्ट्रवाद को जनमानस की भावनात्मक शक्ति बनाया, जबकि टैगोर ने उसे नैतिक और मानवीय दिशा प्रदान की। यदि राष्ट्रवाद को केवल एक राजनीतिक विचारधारा माना जाए, तो इन दोनों के योगदान की पूर्ण महत्ता समझ

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

में नहीं आएगी। वास्तव में दोनों ने राष्ट्रवाद को अलग–अलग स्तरों पर समृद्ध किया। बंकिम का योगदान इस रूप में महत्वपूर्ण है कि उन्होंने राष्ट्र को सांस्कृतिक प्रतीक, मातृभूमि और आध्यात्मिक प्रेरणा के रूप में स्थापित किया। उनके लेखन ने भारतीयों में आत्मगौरव, राष्ट्रीय अस्मिता और स्वाधीनता की आकांक्षा को जगाया। उन्होंने राष्ट्रवाद को जन–चेतना से जोड़ दिया। दूसरी ओर टैगोर ने यह सुनिश्चित किया कि राष्ट्रवाद संकीर्णता, कट्टरता या हिंसक उन्माद की ओर न मुड़ जाए। उन्होंने भारतीयता को मानवता, नैतिकता और विश्वबंधुत्व से जोड़ा। इस प्रकार उन्होंने राष्ट्रवाद को एक संतुलित और उदार स्वरूप प्रदान किया।

इन दोनों की संयुक्त भूमिका भारतीय राष्ट्रवाद की गहराई को समझने में सहायक है। बंकिम के बिना राष्ट्रवाद में भावनात्मक ऊर्जा और सांस्कृतिक गौरव की कमी रहती, जबकि टैगोर के बिना उसमें नैतिक विवेक और सार्वभौमिक दृष्टि का अभाव हो सकता था। एक ने राष्ट्र को जगाया, दूसरे ने उसे दिशा दी। यही कारण है कि भारतीय राष्ट्रवाद की बहुआयामी प्रकृति को समझने के लिए इन दोनों विचारकों को साथ पढ़ना आवश्यक है। उनके चिंतन से स्पष्ट होता है कि सशक्त राष्ट्रवाद वही है जो अस्मिता और मानवता दोनों को साथ लेकर चले।

निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण की प्रक्रिया बहुआयामी, जटिल और ऐतिहासिक रूप से विकसित होने वाली प्रक्रिया थी, जिसमें राजनीतिक संघर्ष के साथ–साथ सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक पुनर्जागरण, नैतिक दृष्टि और साहित्यिक हस्तक्षेप की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इस संदर्भ में बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर के विचार भारतीय राष्ट्रवादी चिंतन की दो विशिष्ट, किंतु परस्पर पूरक धाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों ने अपने–अपने साहित्य, चिंतन और सांस्कृतिक दृष्टि के माध्यम से भारतीय समाज को आत्मबोध, राष्ट्रीय अस्मिता और सामूहिक चेतना की ओर उन्मुख किया। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने भारतीय राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक और भावनात्मक आधार प्रदान किया। उन्होंने राष्ट्र को मातृभूमि, शक्ति और पवित्र सांस्कृतिक सत्ता के रूप में स्थापित कर भारतीय समाज में आत्मगौरव, समर्पण और राष्ट्रीय जागरण की भावना उत्पन्न की। उनकी रचनाओं, विशेषतः 'आनंदमठ' और 'वंदे मातरम्', ने राष्ट्रवाद को जनमानस की संवेदना से जोड़ने का कार्य किया। उनके विचारों ने यह स्पष्ट किया कि राष्ट्र केवल राजनीतिक सीमा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति, ऐतिहासिक गौरव और आध्यात्मिक निष्ठा का भी विषय है। दूसरी ओर, रविन्द्र नाथ टैगोर ने भारतीय राष्ट्रवाद को मानवीय, नैतिक और सार्वभौमिक दृष्टि प्रदान की। उन्होंने राष्ट्रवाद की उस संकीर्ण और उग्र प्रवृत्ति का विरोध किया, जो मनुष्य की स्वतंत्रता, संवेदना और विश्वबंधुत्व को सीमित करती है। टैगोर के चिंतन में राष्ट्र के प्रति प्रेम है, पर वह प्रेम विवेक, नैतिकता और मानवता से संयुक्त है। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि सच्चा राष्ट्रवाद वही है जो सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करे, व्यक्ति की गरिमा को सुरक्षित रखे और विश्वमानवता के साथ सामंजस्य स्थापित करे।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो बंकिम और टैगोर के राष्ट्रवादी विचारों में भिन्नता होने पर भी उनका अंतिम उद्देश्य भारत का नैतिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय उत्थान ही था। बंकिम ने राष्ट्रवाद को जन–जागरण की शक्ति बनाया, जबकि टैगोर ने उसे नैतिक संतुलन और मानवीय दिशा दी। बंकिम के यहाँ राष्ट्रीय आवेग अधिक प्रबल है, जबकि टैगोर के यहाँ राष्ट्रीय विवेक अधिक गहरा है। एक ने राष्ट्रवाद को प्रेरणा दी, दूसरे ने उसे मर्यादा दी। एक ने राष्ट्रीय अस्मिता को स्वर दिया, दूसरे ने उसे विश्वमानवता से जोड़ा। अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रवाद की संपूर्ण समझ बंकिम चन्द्र चटर्जी और रविन्द्र नाथ टैगोर दोनों के सम्मिलित अध्ययन से ही संभव है। भारतीय राष्ट्रवाद न तो केवल सांस्कृतिक आग्रह था और न केवल मानवतावादी आदर्श, बल्कि वह इन दोनों के रचनात्मक समन्वय से निर्मित एक व्यापक राष्ट्रीय चेतना थी। यही इस अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष है कि भारतीय राष्ट्रवाद की शक्ति उसकी बहुलता, संतुलन, सांस्कृतिक गहराई और नैतिक व्यापकता में निहित है। वर्तमान समय में भी, जब राष्ट्रवाद की अवधारणा पर पुनर्विचार हो रहा है, बंकिम और टैगोर का चिंतन हमें यह सिखाता है कि राष्ट्र के प्रति प्रेम और मानवता के प्रति प्रतिबद्धता एक–दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक स्वस्थ और प्रगतिशील राष्ट्रीय जीवन के दो अनिवार्य आधार हैं।

संदर्भ सूची:

1. एंडरसन, बी. (2006). *कल्पित समुदायः राष्ट्रवाद की उत्पत्ति और प्रसार पर विचार (संशोधित संस्करण).* वर्सो।
2. बंद्योपाध्याय, एस. (2004). *प्लासी से विभाजन और उसके बादः आधुनिक भारत का इतिहास.* ओरिएंट लॉन्गमैन।
3. चटर्जी, बी. सी. (2005). *आनंदमठ, अथवा पवित्र बंधुत्व (जे. जे. लिप्नर, अनुवादक).* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (मूल कृति 1882 में प्रकाशित)
4. चटर्जी, पी. (1986). *राष्ट्रवादी चिंतन और औपनिवेशिक विश्वः एक व्युत्पन्न विमर्श?* जेड बुक्स।
5. दत्ता, के., एवं रॉबिन्सन, ए. (1995). *रवीन्द्रनाथ टैगोरः बहुआयामी व्यक्तित्व.* ब्लूम्सबरी।
6. सरकार, एस. (1983). *आधुनिक भारत, 1885–1947.* मैकमिलन।
7. टैगोर, आर. (1917). *राष्ट्रवाद.* मैकमिलन।
8. टैगोर, आर. (2005). *घर और संसार (एस. टैगोर, अनुवादकय डब्ल्यू. रैडिस, संपादक, संशोधित संस्करण).* पेंगुइन बुक्स।